International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2025; 7(10): 43-46
Received: 09-08-2025
Accepted: 11-09-2025

डॉ. अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

श्वेता सिंह
शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अवधेश कुमार
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

विकसित भारत एवं नगरीय विकास में डिजिटल तकनीक

अवधेश कुमार, श्वेता सिंह

DOI: https://www.doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i10a.807

सारांश
विकसित भारत/2047, भारत सरकार का विजन है जिसका लक्ष्य 2047 तक अर्थात् अपनी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। भारत में हाल के दशकों में गाँवों से नगरों की ओर जनसंख्या का रूपान्तरण तेजी से हो रहा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का 31.04 प्रतिशत भारत के नगरों में निवास करता है। संयुक्त राष्ट्र की 2018 की विश्व शहरीकरण संभावनाओं की रिपोर्ट के अनुसार–भारत की 2051 तक आधे से अधिक जनसंख्या नगरों में निवास करेगी। बढ़ते नगरीकरण से 2047 तक विकसित भारत के सपने को साकार करने में भारत के नगरों की अहम भूमिका होगी। भारत 'अवसरों की एक जनसांख्यिकी खिड़की', जो एक 'युवा उभार' का अनुभव कर रहा है। भारत के नगर, युवा जनसंख्या के सपनों को साकार करने के लिए नगरीय नियोजन का मार्ग अपना रहे हैं जिससे तकनीकी एवं डिजिटल परिवर्तन के इस युग में भारत की युवा जनसंख्या जो देश के भविष्य का आधार है उनको एक सतत् नगरीय जीवन स्तर प्राप्त हो सके। पिछले एक दशक में भारत की डिजिटल यात्रा ने न केवल सेवाओं एवं प्रशासन को बदला है बल्कि मजबूत आर्थिक विकास का आधार भी तैयार किया है। भारत के नगर तकनीकी एवं डिजिटल परिवर्तन के इस युग में भारत की अद्वितीय जनसांख्यिकीय और आर्थिक परिदृश्य के साथ गहराई से जुड़े हैं। भारत को 2047 तक विकसित बनाने में भारतीय नगरों एवं युवा आजादी को डिजिटल परिवर्तन को एक नवाचार के रूप में लेना होगा जो एक मानवीय कौशल के उत्पाद के रूप में उभरता है।

कुटशब्दः विकसित भारत, तकनीकी एवं डिजिटल परिवर्तन, नगरीय नियोजन, समावेशी विकास

प्रस्तावना
जैसे ही भारत ने स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे किए हैं, राष्ट्र वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में एक प्रमुख शक्ति के रूप में विकसित हो रहा है। भू–राजनीतिक संकट के समय में सरकार ने भौतिक, डिजिटल और विनियामक अवसंरचना के क्षेत्रों में सुधारों पर अपना ध्यान केन्द्रित रखा। विकसित भारत/2047ए भारत सरकार का महत्वाकांक्षी विजन है जिसका उद्देश्य 2047 तक, उसकी स्वतंत्रता के 100वें वर्ष तक, भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना है। इस विजन में आर्थिक विकास जिसमें डिजिटल सशक्त समाज, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विकास के विभिन्न पहलू शामिल हैं। विजन इण्डिया/2047 अगले 25 वर्षों में भारत के विकास का खाका तैयार करने के लिए भारत के शीर्ष थिंक टैंक, नीति आयोग द्वारा एक परियोजना शुरू की गई है। परियोजना का लक्ष्य भारत को नवप्रवर्तन और प्रौद्योगिकी में वैश्विक कल्याण अग्रणी देश, मानव विकास और सामाजिक का मॉडल और आकर्षक लक्ष्यता का चैम्पियन या उत्साही पक्ष–समर्थक बनाना है।

भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था रिपोर्ट 2024, भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था का एक व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है, जिसके अनुसार भारत दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी डिजिटल अर्थव्यवस्था है। आधुनिकता के दौर में वैश्विक युग की आवश्यकता है डिजिटल सशक्तीकरण। विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भारत अपने समाज को डिजिटली सशक्त बनाने के लिए प्रयासरत् है। विश्वभर में हो रहे परिवर्तनों को देखते हुए भारत ने डिजिटल और संचार विकास पर अधिक जोर दिया है। 2025 तक 1 ट्रिलियन डॉलर की डिजिटल अर्थव्यवस्था के विज के साथ, सरकार अधिक से अधिक ई–गवर्नेंस सेवाएं प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। विश्व भौतिक अवसंरचना पर ध्यान केन्द्रित करने से डिजिटल अवसंरचना में निवेश के उद्देश्य से आगे बढ़ रहा है। कुछ ऐसा ही स्मार्ट शहरों के तहत प्रयास किया गया है, जो डिजिटल अस्तित्व और डिजिटल सेवाओं के साथ क्षेत्र आधारित विकास को अंतर–सम्बद्ध करता है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की शहरी जनसंख्या देश की कुल आबादी का 31 प्रतिशत थी और 2030 तक इससे बढ़कर 40 प्रतिशत और 2050 तक 50 प्रतिशत अर्थात् 80 करोड़ को पार कर जाने का अनुमान है। 2011 की जनगणना के अनुसार शहरी भारत देश के सकल घरेलू उत्पाद में 63 प्रतिशत का योगदान करता है और 2030 में इसके 75 प्रतिशत हो जाने का अनुमान है।

धनी आबादी और भौतिक सम्पत्तियों की वजह से जलवायु परिवर्तन, आपदाओं और संघर्षों के प्रति शहरों की संवेदनशीलता कई गुना बढ़ जाती है। लेकिन अगर शहरों काम ठीक से नियोजन और प्रबन्धन किया जाए तो शहर प्रगति और चिरस्थायी विकास का माध्यम बन सकते हैं। शहरीकरण की चुनौतियों को देश की अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने के एक अवसर के रूप में देखा उन्हें लगा कि बुनियादी ढाँचे में निवेश से रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे। जीवन–यापन करने में सुविधा होगी और राष्ट्र की सेवा में नागरिकों की क्षमताओं का बेहतरीन उपयोग किया जा सकेगा। स्मार्ट सिटीज मिशन 25 जून, 2015 को भारत में शुरू किया गया था। स्मार्ट सिटीज ऐसे शहर है जो अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता के स्तर में सुधार के लिए सुगम तकनीक का उपयोग करते हैं।

साहित्य अवलोकन

एस.के. कौशल की पुस्तक डिजिटल 'इण्डियाः इम्पार्टस, नीड्स एण्ड वैल्यू' का अध्ययन किया गया जिसमें डिजिटल इण्डिया की आवश्यकता क्यों है और इसका महत्व क्या है इस पर प्रकाश डाला गया है।

मुकेश कुमार की पुस्तक डिजिटल इण्डिया का अध्ययन किया गया जिसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि तकनीकि एवं नवाचार कैसे मुख्य क्षेत्रों को परिवर्तित कर रहा है। भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज एवं ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए चुनौतियों एवं अवसरों को समझने की एक मार्गदर्शिका के रूप में है। पुस्तक के पाँचों अध्यायों में व्यापक रूप से डिजिटल इण्डिया के आयामों व प्रभावों का उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त संतोष मेहरोत्रा की एडीटेड बुक इण्डियाज स्किल चैलेंज का अध्ययन किया गया जिसमें भारत के जनसांख्यिकीय संरचना के संदर्भ में स्किल इण्डिया की समीक्षा की गई है।

आदित्य पिट्टी की पुस्तक 'विकसित भारतः 2047 में भारत' में स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने तक एक विकसित राष्ट्र बनने की भारत की यात्रा का एक दूरदर्शी और डेटा संचालित खाका है।

शोध पत्र प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसमें गुणात्मक पहलुओं का अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि द्वारा किया गया है।

विकसित भारत/2047

भारत का अस्तित्व उसके नागरिकों की आशाओं, अपेक्षाओं और सपनों पर टिका है। उनको साकार करने के लिए हमारी दृष्टि टेक्नोलॉजी से संचालित और ज्ञान आधारित ऐसी अर्थव्यवस्था बनाने की है जिसमें सार्वजनिक वित्तीय स्थिति और संरचना मजबूत हो। इसके लिए आवश्यक है युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर हो, जिससे वे अपने सपनें पूरे करें। साथ ही भारत के विकास को समग्र रूप से टिकाऊ और सतत् प्रगतिशील बनाये रखना होगा। नया भारत क्रांतिकारी बदलाव के साथ सहकारी संघीय प्रवृत्ति के साथ विकसित भारत बनने के पथ पर अग्रसर है। विकसित भारत/2047 भारत को एक ऐसा देश बनाने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है जो सभी पहलुओं में आत्मनिर्भर और यहाँ समाज के सभी पाँच वर्गों की बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच हो तेजी से बदलती परिस्थितियों में, सरकार को स्थायी प्रवृत्तियों के वर्तमान और भविष्य में प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए अच्छी तरह से तैयार रहने और अपने प्रशासन को सही गति से चलाने की जरूरत है। डिजिटल केवल प्रौद्योगिकी के बारे में नहीं है, बल्कि यह लोगों, प्रक्रियाओं, व्यवहार और प्रौद्योगिकी का एक रोडमैप है, जो सरकार को इस परिवर्तन को शासन में सफलतापूर्वक लागू करने में सक्षम करेगा। 35 वर्ष से आयु की 65 प्रतिशत आबादी और 28 वर्ष की औसत आयु के साथ, भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश जैसे वैश्विक प्रतिभा का केन्द्र बनाता है। बशर्ते यह रोजगार योग्य, उद्योग–प्रासंगिक कौशल वाले कार्यबल को विकसित कर सके। बदलते नौकरी बाजार को ए.आई. और लार्ज लैंग्वेज मॉडल जैसी तेजी से बदलती तकनीकों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए लचीली कौशल रणनीतियों की आवश्यकता है। ए.आई. विभिन्न क्षेत्रों को कैसे प्रभावित करता है इस पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। डिजिटल शासन एक अनुशासन है, जो डिजिटल कार्यनीति, नीति और मानकों के लिए स्पष्ट जवाबदेही स्थापित करने पर केन्द्रित है। तकनीकी एवं आर्थिक रूप से युवाओं व महिलाओं को सशक्त बनने के साथ–साथ भारत को आर्थिक महाशक्ति के रूप में बदलाव हो रहा है। यू.पी.आई. क्रांति और डिजिटल स्टैक ने वित्तीय लेन–देन को सहज और प्रभावशाली बना दिया है। पी.एम. कौशल विकास योजना के तहत कौशल प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है।

सरकार के उद्देश्यों के अनुरूप डिजिटल समावेशन, तकनीकी नवाचार और विनियामक सुधारों में बड़ी प्रगति हुई है। जो सरकार के डिजिटल इंडिया के विजन के अनुरूप है। 5जी सेवाओं के प्रारम्भ से डिजिटल कनेक्टिविटी में व्यापक परिवर्तन आया है। 31 अक्टूबर, 2024 तक सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में 5जी सेवाएं शुरू की गई। वर्तमान में 783 जिलों में से 779 में 5जी सेवाएं उपलब्ध है। देशभर में 4.6 लाख से अधिक 5जी बेस ट्रांसीवर स्टेशन लगाए गए हैं। जहाँ 2009 तक भारत में केवल 17 फीसद वयस्कों के पास बैंक खाते थे, 15 प्रतिशत डिजिटल भुगतान का उपयोग करते थे। आज संचार घनत्व 93 पतिशत तक पहँच गया है, एक अरब से अधिक लोगों के पास डिजिटल आईडी दस्तावेज है, 80 प्रतिशत से अधिक के पास बैंक खाते हैं और 2022 तक, प्रति माह 600 करोड़ से अधिक डिजिटल भुगतान लेन–देन पूरे किए गए। डिजिटल क्रांति का प्रभाव रहा है कि जिस वित्तीय समावेशन में आधी सदी लगती उसे भारत ने महज 10 वर्षों में हासिल कर लिया है। वन स्टाप कोविन पोर्टल, डिजिलॉकर, जी.एस.टी., यू.पी.आई. एक ओर ऐसा नवाचार जो भुगतान परिदृश्य बदल दिया। सरकार का डिजिटल अवसंरचना की उपलब्धता और प्रसार आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देगा जो देश को विकसित भारत बनाने की दिशा में अग्रसर करेगा।

नगरीय नियोजन में डिजिटल तकनीकी

भारत में नगरीय प्रशासन ने अपनी क्षमता बढ़ाने के लिए सोच समझ कर लोक सेवा में सुधार किया ताकि नीतियों को प्रभावी और कुशलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा सके। हाल के समय में प्रौद्योगिकी उन्नयन, अधिक विकेन्द्रीकरण तथा सामाजिक सक्रियता के कारण वैश्विक स्तर पर बदलाव तेज हुआ है। किसी खास शहर के लिए ऐसी उपयुक्त टेक्नोलॉजी का सावधानी से चयन जो समुदायों की खास जरूरतों के अनुसार बनायी गयी हो बहुत जरूरी है। शहर लोगों के लिए होते हैं इसलिए उन्हें समावेशन सभी लोगों के सुविधाएँ प्रदान करने के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए। स्मार्ट शहर तीन मूल मुद्दों पर ध्यान देते हैं–रहने के लिहाज से सुविधाजनक, आर्थिक सक्षमता और टिकाऊपन। शहरी इलाकों में डिजिटल तकनीकी की सहायता अपने नागरिकों को बेहतर गुणवत्ता वाला जीवन उपलब्ध करने और चिरस्थायी विकास के लिए मजबूत आधार का कार्य कर रही है।

नगरीय नियोजन में डिजिटल तकनीकी के प्रयोग के माध्यम से नगर अपने स्थानीय उत्पादों और कौशल का प्रचार–प्रसार कर,

साथ ही भारत की मृदु शक्ति को विश्व पटल पर स्थापित कर 'वोकल फॉर लोकल अभियान' को आगे बढ़ा सकेगें। किसी भी प्रयास की सफलता के लिए जन भागीदारी अनिवार्य है। डिजीटलीकरण सरकारों के द्वारा विशेषकर लोगों की समस्याओं पर सामान्य रूप से विकास के मुद्दे को सम्बोधित करने के तरीके को बदल रहा है। प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग और लोगों तक सूचना के त्वरित प्रसार के माध्यम से सुशासन की खोज को आज विकास का सबसे प्रभावी और परिणामोन्मुखी माध्यम माना जा रहा है। डिजिटल शासन समाज में हो रहे व्यापक डिजिटल परिवर्तन से प्रेरित है, जिसका लक्ष्य अधिक कुशल, उत्तरदायी और जवाबदेह शासन संरचनाएँ बनाने के लिए प्रौद्योगिकी की क्षमता को दोहन है। नागरिकों के लिए भी डिजिटल मंच कारगर हो रहे हैं। वे योजना प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के साथ त्वरित प्रतिक्रिया देकर अपनी भागीदारी कर रहे हैं। डिजिटल तकनीकी ने नियोजन की वास्तविक समय में निगरानी एवं समस्याओं की तुरंत पहचान कर समाधान देने में सहायक है।

डिजिटल इण्डिया कार्यक्रम की शुरूआत वर्ष 2015 में की गई थी इसके द्वारा अवसंरचना में निवेश और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर तथा ऑनलाइन सेवाओं के प्रावधान के विस्तार के जरिये शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच खाई पाटने की कोशिश की जा रही है। डिजिटल तौर पर सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में तब्दील करना है। जिसका उद्देश्य, हर नागरिक के लिए मुख्य उपभोग के तौर पर डिजिटल अवसंरचना, मार्ग पर शासन और सेवाएँ, नागरिकों का डिजिटल सशक्तीकरण इसमें विकास के इन नौ स्तम्भों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है–ब्राडबैंड हाइवे, सबके लिए मोबाइल कनेक्टिविटी सार्वजनिक इंटरनेट, पहुँच कार्यक्रम, ई–शासन, प्रौद्योगिकी के जरिये सरकार में सुधार, ई–क्रांति : सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण, रोजगारों के लिए सूचना प्रौद्योगिकी तथा शीघ्र लाभ कार्यक्रम, डिजिटल युक्त नगर नियोजन से नगरों के जीवन में पारदर्शिता बढ़ी है। लोगों को डिजिटल माध्यमों से अपनी समस्याओं का समाधान शीघ्र प्राप्त हो जाता है।

मेघराज के नाम से जी.आई. क्लाउड पहल भारत की सूचना प्रौद्योगिकी रणनीति का एक प्रमुख घटक है, जिसका उद्देश्य केन्द्र और राज्य–संघ क्षेत्रों के विभागों को क्लाउड कम्प्यूटिग के माध्यम से आई.सी.टी. सेवाएं प्रदान करना है। नीतिगत पहल, नियोजन और कारगर कार्यान्वयन के जरिए देशवासियों को नई राहें और अवसर प्रदान किया जाना न्यू इण्डिया के निर्माण को बल दे सकता है। राष्ट्र का यह नव–निर्माण आत्मनिर्भर भारत, सबका साथ–सबका विकास–सबका विश्वास, डिजिटल इण्डिया, स्किल इण्डिया और ऐसे ही अनेक स्तंभों पर टिका होगा।

डिजिटल तकनीकी युक्त नगरीय नियोजन की चुनौतियाँ

भारत एक व्यापक बदलाव के दौर से गुजर रहा है। हमारा उद्देश्य एक ऐसा वातावरण बनाने का है जिसमें प्रत्येक देशवासी अपनी क्षमताओं का पूरा लाभ उठा सके एवं उद्देश्यपूर्ण जीवन–यापन कर सके। जिसके लिए शासन स्तर से लेकर अधिकांश संस्थाओं द्वारा तकनीकी व नवाचार सम्बन्धी अनेक प्रयास किए जा रहे लेकिन भारत जैसे विविधता भरे समाज में डिजिटल युक्त नगरीय नियोजन एक चुनौती का भी विषय है। डिजिटल डिवाइड की समस्या नगरों में कम है परन्तु तकनीकी का विवेकपूर्ण उपयोग योजनाओं, पहलों, प्रयासों तक पहुँचने के सार्थक प्रयास में नगरों में भी चुनौती व्याप्त है। डिजिटल तकनीकी युक्त नगरीय नियोजन में उच्च कार्यान्वयन लागत की भी चुनौती है। समाज का एक बड़ा तबका अभी भी बुनियादी डिजिटल साक्षरता ऑनलाइन सुरक्षा की समझ के अभाव से ग्रसित है। साइबर सुरक्षा सम्बन्धी चिंताएं दिन–प्रतिदिन और जटिल होती जा रही हैं। गोपनीयता की समस्या नागरिकों के अधिकारों एवं डेटा संग्रह के लाभों के मध्य संतुलन बनाना एक अलग चुनौती है। नगरीय नियोजन में डिजिटल क्षमता निर्माण के साथ–साथ कौशल उन्नयन की भी आवश्यकता है। जैसे–जैसे डिजिटल शासन का विकास प्रगति पर है, चुनौतियों से पार पाना व इसके लाभों को अधिकतम करने की रणनीतियाँ महत्त्वपूर्ण होती जा रही है। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, मजबूत साइबर उपाय आदि के माध्यम से समस्या की जटिलता को कम किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

आगे की राह

आवश्यकता है कि भारत के नगर की सम्पूर्ण उद्यमशीलता कौशलता पहल पर विचार करते हुए भारत की बढ़ती आकांक्षाओं को समाहित करें। स्मार्ट सिटी जैसे पहल के लिए तकनीकी जानकारी रखने वाले स्मार्ट नागरिकों की आवश्यकता पड़ेगी। स्मार्ट शहरों को हमेशा सामाजिक दृष्टि से समावेशी बने रहना होगा। विकसित भारत बनने के लिए आवश्यकता है समावेशी विकास का जो समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, बुनियादी ढाँचा मजबूत करने का, युवा शक्ति को बढ़ावा देने का। विकसित भारत/2047 केवल दृष्टिकोण मात्र नहीं है, अपितु प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति से साकार होती एक वास्तविकता है। भारत के नगरों के लिए जो विकास के मुख्य वाहक की भूमिका में है उन्हें भी यह प्रयास करना होगा कि डिजिटल तकनीकी के दौर में कोई पीछे न छूटे, जहाँ आर्थिक विकास समावेशी हो। सभी के लिए अवसर उपलब्ध हो। वैश्विक मंच पर भारत अब केवल भागीदार नहीं अपितु नेतृत्वकर्ता की भूमिका में है।

भारत की स्वतंत्रता के 100वें वर्ष अर्थात् वर्ष 2047 तक भारत के विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में शामिल होने की संभावना वास्तविक रूप से मनोरम है। देश में प्रगति को देखते हुए इस महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य को साकार करना आवश्यक है। नगरीय नियोजन भारत के नगरों की समय की आवश्यकता है। भारत जो 21वीं सदी में नगरीयकरण की क्रांति हो रही है जो कि उसके अग्रिम पंक्ति में है। भारतीय नगरों को बढ़ती जनसंख्या को समायोजित करने के लिए नियोजन का मार्ग अपनाने की ओर बढ़ना होगा। जिसमें डिजिटल इण्डिया, स्मार्ट सिटी मिशन, अमृत मिशन जैसे डिजिटल तकनीकी के माध्यम से नगरों में निवासियों का जीवन सरल बना रहे है। एक लचीले कौशल पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए सभी हितधारकों के सहयोगात्मक प्रयास की आवश्यकता है। भारत के युवाओं को उभरते हुए नौकरी बाजार में आगे बढ़ने के लिए, नौकरी चाहने वालों को उद्योग–विशिष्ट कौशल विकसित करने का ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। डिजिटल परिवर्तन के दौर में भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाने के लिए सरकार, नागरिक व नागरिक समाज, निजी संस्थाएँ सभी को एक सहयोगात्मक प्रयास करना होगा जिससे चुनौतियों का सामना व भविष्य के अवसरों का लाभ उठाया जा सके। भारत की प्रवासी आबादी 32 मिलियन है जो 2020 तक वैश्विक स्तर पर सबसे बड़े प्रवासी देशों में से एक बन गया है। भारत एक युवा आबादी के साथ विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहा है। भारत की अर्थव्यवस्था सकल घरेलू उत्पाद की दृष्टि से विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है जबकि क्रय शक्ति समता की दृष्टि से विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यू.पी.आई व जन धन खाते जैसे कार्यक्रम भारत में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय समावेशन को बदल रहे हैं। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था आर्थिक विकास और रोजगार का प्रमुख चालक है। पारम्परिक क्षेत्रों का डिजिटलीकरण, डिजिटल प्लेटफार्म के उदय के साथ, उद्योगों में बदलाव ला रहा है और रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहा है। बढ़ती डिजिटल साक्षरता, उभरती तकनीकों को अपनाने और रोजगार की बढ़ती संभावनाओं के साथ, भारत डिजिटल परिवर्तन

में अग्रणी भूमिका निभाने और सतत एवं समावेशी विकास सुनिश्चित करने की स्थिति में है। भारत सशक्त डिजिटल समाज के साथ महत्वाकांक्षी लक्ष्य 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की तरफ अग्रसर है।

संदर्भ सूची

1. आर्थिक सर्वेक्षण (2024–25)।
2. कौर, गुरलीन (2024), विकसित भारत/2047, शिवा बुक्स प्रकाशन।
3. तुरकर हेकेश्वर कुमार, विकसित भारत/2047, काव्या प्रकाशन।
4. नीति आयोग स्ट्रेटेजी फार न्यू इंडिया/75 रिपोर्ट, 2018।
5. पिट्टी, आदित्य (2025), विकसित भारतः 2047 में भारत, फिंगरप्रिंट प्रकाशन
6. सिंह, नम्रता, सिंह, अमितेश, विकसित भारत/2047 चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ।

7- https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx2.Moduld d=3&Notes =154788